



अमरुद के पुराने एवं अनुत्पादक बागों का जीर्णोद्धार

अमरुद भारत में पाया जाने वाला उच्च गुणवत्ता वाला फल है। अपनी अनेक प्रकार के मौसम तथा मृदाओं में सफलतापूर्वक उगने की क्षमता तथा उच्च विटामिन सी उपलब्धता के कारण इसे अन्यान्य फलों से श्रेष्ठ माना गया है। वर्तमान समय में अमरुद के अधिकतर बाग पुराने हो गये हैं। इनके अधिक घने होने के कारण इनकी उत्पादकता में निरंतर कमी हो रही है। ऐसे में इन बागों में कुछ वैज्ञानिक उपायों के समायोजन की अन्यन्त आवश्यकता है जिससे उत्पादन के उच्चतम स्तर को कम-से-कम खर्च में प्राप्त किया जा सकता है एवं इन बागों से व्यावसायिक स्तर पर उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा विकसित जीर्णोद्धार तकनीक एक ऐसी ही पद्धति है जिसके द्वारा पुराने एवं अनुत्पादक बागों को उत्पादक बागों में परिवर्तित किया जा सकता है।



जीर्णोद्धार तकनीक

जीर्णोद्धार तकनीक को मुख्यतः उन बागों में अपनाना चाहिये जिनमें उत्पादन न्यूनतम स्तर पर पहुँच गया है। इन बागों के वृक्षों की अत्यधिक बढ़वार के फलस्वरूप पूर्ण आच्छादन हो जाता है। इस कारण निचली शाखाओं पर सूर्य का प्रकाश प्रविष्ट न होने के कारण प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया अच्छे ढंग से नहीं हो पाती है।

इससे पेड़ के निचले स्तर पर कल्पे विकसित नहीं होते तथा कीट एवं व्याधियों का अत्यधिक प्रकोप हो जाता है जिसके फलस्वरूप उत्पादन में ह्रास हो जाता है।

इन बागों में व्यावसायिक गुणवत्तायुक्त उत्पादन के मानकों को स्थापित करने के उद्देश्य से पेड़ों को जमीन से 1.0 से 1.5 मीटर की ऊँचाई पर चिन्हित कर के धारदार आरी की सहायता से



अमरुद के घने एवं अनुत्पादक पौधे

आलेख: डॉ. वी. के. सिंह, डॉ. मनोज कुमार सोनी, अनुराग सिंह; सम्पादन मण्डल : डॉ. अजय वर्मा एवं धीरज शर्मा
प्रकाशक : डॉ. एच. रविशंकर, निदेशक, सी.आई.एस.एच. एवं डॉ. वी.के. सिंह, प्र. वैज्ञानिक एवं पी.आई., पी.एफ.डी.सी.

सुनियोजित कृषि विकास केन्द्र
(पी.एफ.डी.सी.), एन.सी.पी.ए.एच., कृषि मंत्रालय, भारत सरकार
केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, लखनऊ - 226 101



काटा जाता है। इसे करने का अनुकूल समय मई–जून या दिसम्बर–फरवरी का महीना होता है। काटने के समय यह सावधानी रखनी चाहिये कि डालें न फट जायें। अतः डालों को पहले नीचे की तरफ से काटना चाहिये। इसके पश्चात कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीकलोराइड का लेप लगाना चाहिये। कटाई के उपरान्त पौधों में थाले बनाकर उसमें 50 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद डाल कर सिंचाई की जाती है। कटाई के 4–5 माह बाद नये कल्ले प्रस्फुटित होने लगते हैं। इन कल्लों का विरलीकरण करना चाहिये जिससे प्रत्येक शाखा पर 4–5 स्वस्थ कल्ले हों। जब इन कल्लों की लम्बाई 40–50 से.मी. हो जाये तब इनकी लम्बाई का 50 प्रतिशत भाग काटा जाता है जिससे काटे गये स्थान के नीचे



जमीन से 1.0 से 1.5 मी. की ऊँचाई से कटाई



अमरुद के कटी हुई शाखाओं से नये कल्लों का सृजन

नये कल्लों का सृजन हो सके। द्वितीय कटाई के फलस्वरूप विकसित कल्ले फलत कलिकाओं के विकास में सहायक होते हैं। वर्षा ऋतु की फसल सामान्यतः अधिक होती है परन्तु कीट व्याधियों के अधिक प्रकोप, शीघ्र पकने तथा कम स्वादिष्ट होने के कारण इनकी गुणवत्ता कम हो जाती है। अतः व्यापारिक एवं मूल्य की दृष्टि से इनका महत्व कम हो जाता है। अधिक–से–अधिक शुद्ध लाभ कमाने हेतु शरद ऋतु में फलत लेनी चाहिए। इसके लिये मई माह में 50 प्रतिशत कल्लों की पुनः कटाई–छाँटाई कर देनी चाहिये। इस तरह से नये कल्लों का सृजन होने से शरद ऋतु में भरपूर फसल प्राप्त करने की आपार सम्भावनाएं होती हैं।

सिंचाई प्रबंधन

जीर्णोद्धार वृक्षों में नियमित सिंचाई का विशेष महत्व है अन्यथा नये कल्ले सूख सकते हैं। गर्भियों में 10–15 दिनों तथा सर्दियों में 25 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिये। सिंचाई के विभिन्न तरीकों में टपक सिंचाई द्वारा उत्साहजनक परिणाम मिले हैं। इस विधि द्वारा सिंचाई करने से फलों की संख्या, उत्पादन, गुणवत्ता पर गुणात्मक वृद्धि पायी गयी। पारम्परिक सिंचाई की अपेक्षा टपक सिंचाई प्रणाली द्वारा सिंचाई करने पर पौधे की ऊँचाई एवं कैनोपी का फैलाव, तने की मोटाई एवं सक्रिय जड़ों का विकास आदि में धनात्मक वृद्धि होती है तथा खरपतवार नियंत्रण में सहायता मिलती है।



अमरुद के जीर्णोद्धार बाग में टपक प्रणाली द्वारा सिंचाई

पोषक तत्व प्रबंधन

जीर्णोद्धारित बागों में कटाई के उपरान्त 50 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद, 5 कि.ग्रा. नीम की खली देना चाहिये। कटाई के 6 माह उपरान्त 50 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद, 3 कि.ग्रा. नीम की खली, 910 ग्रा. यूरिया तथा 500 ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश जून माह में देना चाहिये। इसके उपरान्त 390 ग्रा. यूरिया एवं 1875 ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट सितम्बर माह में दी जाती है।

जीर्णोद्धारित बागों में मलिंग

कटाई के उपरान्त बागों में वृक्षों के चारों तरफ प्लास्टिक मलिंग (पलवार) के प्रयोग से गुणवत्तायुक्त अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह उत्पादन लागत को भी कम करता है जिससे शुद्ध लाभ में वृद्धि की जा सकती है।



अमरुद के जीर्णोद्धार बाग में काली पॉलीथीन फिल्म से मलिंग

अन्तःफसल

जीर्णोद्धार के तीन वर्ष पश्चात तक सब्जी एवं दलहनी फसलें आसानी से पैदा की जा सकती हैं। मटर, सेम, फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली, मिर्च, बैगन तथा आंशिक छाया चाहने वाली फसलें जैसे अदरक, सूरन एवं हल्दी आदि बाग में अन्तःफसल के रूप में लेने से कैनोपी विकास की प्रारम्भिक अवस्था में अच्छा लाभ प्राप्त होता है।



अमरुद के जीर्णोद्धारित बाग में बैगन की अन्तःफसल

जीर्णोद्धार उपरान्त उपज

जीर्णोद्धार उपरान्त पौधों से 30–35 कि.ग्रा. प्रति पौध उपज मिलने लगती है जिससे आगे चलकर कैनोपी के फैलाव के अनुसार उपज में निरंतर वृद्धि होती है।

जीर्णोद्धार हेतु कटाई—छंटाई उपरान्त कृषकों द्वारा सावधानीपूर्वक की जाने वाली प्रबंधन प्रक्रियाएँ

1. कटे भाग पर गोबर अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगायें।

2. नियमित रूप से सिंचाई करने तथा रासायनिक एवं गोबर की खाद डालने हेतु थालों को बनायें।
3. रासायनिक खाद की संस्तुत मात्रा एवं 50 कि.ग्रा. प्रति पौधा सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करें।
4. तेज़ धूप के कारण नुकसान से बचाने के लिए तने एवं शाखाओं पर कॉपर तथा चूने का लेप लगायें, इसके लिए बोडेक्स मिश्रण अधिक उपयुक्त पाया गया।
5. जीर्णोद्धार के पश्चात् कल्लों के सृजन तथा समुचित वानस्पतिक वृद्धि के लिए सिंचाई सुनिश्चित करें।
6. साइकिल की तीली की सहायता से छिद्रों से तनामेदी कीट यदि आते हैं तो लार्वे को निकालें।
7. रुई के फाये को नुवान में भिंगोकर छिद्रों में रखें तथा उन्हें गीली मिट्टी से बंद कर दें।
8. जीर्णोद्धार के पश्चात् मलिंग के लिए (100 माईक्रान = 400 गेज) यूवी. स्टेविलाइज काली पॉलीथीन फिल्म का उपयोग करें।

जीर्णोद्धार तकनीक का प्रदर्शन

जीर्णोद्धार तकनीक का प्रदर्शन उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, झारखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा हरियाणा के विभिन्न जनपदों में किया गया जहाँ हजारों पौधों का जीर्णोद्धार किया गया। इसके अलावा आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान, गुजरात, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के किसानों के प्रतिनिधिमण्डल को लखनऊ में प्रशिक्षण दिया गया। कृषकों की बागों में जीर्णोद्धार तकनीक के परिणामों से उत्साहित होकर केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने इस तकनीक को मानकीकृत कर कृषक प्रक्षेत्र पर अमरुद के उत्थान में लगी राज्य के संस्थानों का ध्यान आकर्षित किया। राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अन्तर्गत देश के विभिन्न राज्यों के जनपदों में पुराने बागों के जीर्णोद्धार हेतु विस्तृत कार्यक्रम चलाया जा रहा है। आज देश के हर राज्य में जीर्णोद्धार अभियान चल रहा है और इस तकनीक की सफलता से बागवानों की आर्थिक दशा में सुधार हो रहा है।



कृषक का प्रक्षेत्र पर जीर्णोद्धार तकनीक का प्रदर्शन



कृषक का प्रक्षेत्र पर जीर्णोद्धार तकनीक का प्रदर्शन

जीर्णोद्धार तकनीक का क्रमबद्ध चरण

पुराने, घने तथा अनुत्पादक अमरुद के बाग

ज़मीन से 1.0 से 1.5 मी. ऊँचाई पर शाखाओं को काटना

मई / जून

दिसम्बर / फरवरी

कटी शाखाओं से नये कल्लों का सृजन

कल्लों का प्रबन्धन नये कल्लों की लम्बाई का 50 प्रतिशत भाग काटना

अक्टूबर / नवम्बर

मई / जून

फलत वर्षाकृतु

फलत शीतकृतु

सांकुर शाखा की 50 प्रतिशत लम्बाई में प्रति वर्ष मई-जून में कटाई-छंटाई करें, जिससे वृक्ष का आकार एवं फैलाव सही रहता है साथ ही जाड़े में गुणवत्ता युक्त उपज भी प्राप्त होती है। कैनोपी के अन्दर पर्याप्त धूप, रोशनी तथा वायु का आवागमन होने से फलों का उचित विकास होता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

डॉ. वी.के. सिंह

प्रधान वैज्ञानिक एवं पी.आई., पी.एफ.डी.सी.

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ - 226 101

फोन : (0522) 2841022, 2841023

फैक्स : (0522) 2841025

ई-मेल : singhvk_cish@rediffmail.com

डॉ. एच. रविशंकर

निदेशक

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ - 226 101

फोन : (0522) 2841022, 2841023

फैक्स : (0522) 2841025

वेबसाइट:
www.cishlko.org